[25]

No. Of Printed Pages: 2

SARDAR PATEL UNIVERSITY

M.A. I[st] Semester (Hindi) EXAMINATION (NC)

Tuesday,29th March-2016

10-30 a.m.to1-30 p.m.

PA01CHIN01 (भक्ति काव्य)

पूर्णांक : 70

प्रश्न-1. कबीर के सामाजिक चिंतन पर प्रकाश डालिए।

अथवा (17)

'अयोध्या काण्ड' की काव्यगत विशेताओं पर प्रकाश डालिए ।

प्रश्न-2. भ्रमरगीत काव्य परंपरा पर लेख लिखिए।

अथवा (17)

नागमती के विरह वर्णन को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न-3. किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए- (18)

क. 'अयोध्या काण्ड' के भरत

अथवा

कबीर की काव्य-भाषा

ख. भ्रमरगीत का नामकरण

अथवा

जायसी की काव्य-भाषा

प्रश्न-4 ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए। (18)

क . "अगहन दिवस घटा निसि बाढ़ी।दूभर रैनि, जाइ किमि गाढ़ी।।
अब यरि विरह घटा निसि बाढ़ी। दूभर रैनि जाइ किमि गाढ़ी।।
अब यरि बिरह दिवस भा राती। जरौ बिरह जस दिपक बाती।।
काँपै हिया जनावै सीऊ। तौ पै जाइ होइ सँग पीऊ।।
घर घर चीर रचे सब काहू। मोर रूप रंग लेइगा नाहू।।
पलटि न बहुरा गा जो बिछोई। अबहूँ फिरै फिरै रँग सोई।।
बज्र अगिनि बिरहिनि हिय जारा। सुलुगि सुलुगि दगधै होइ छारा।।
यह दुःख दगध न जानै। जोबन जनम करै भसमंतू।।
पिऊ सौं कहेउ संदेसड़ा, हे भौंरा! हे काग!
सो धनि बिरहे जरि मुई, तेहि क धुवाँ हम्ह लाग।।"

अथवा

क. "जोग ठगौरी ब्रज न बिकैहै।
यह व्योपार तिहारो ऊधो ! ऐसोई फिरि जैहै।

जापै लै आए हौ मधुकर ताके उर न समैहै।
दाख छाँड़िकै कटुक निबौरी को अपने मुख खैहै?
मूरी के पतन के केना को मुक्ताहल दैहै।
सूरदास प्रभु गुनहिं छड़ुँड़ि के को निर्गुन निरबै है?।।

ख. "कबीर अंखडियां झांई पड़ी, पंथ निहारि निहारि।
जीभड़ियां छाला पड़या, राम पुकारि पुकारि।। "

अथवा

ख. " राम मातु सुठि सरलचित मो पर प्रेम बिसेषि।
कहइ सुभाय सनेह बस मोरि दीनता देखी।।"

X=X=X